1. गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए प्रश्नों के उत्तर लिखिए|

"जब मैं जीवित था" -मूर्ति ने उत्तर दिया -"और मेरे वक्ष में मनुष्य का ह्रदय धड़कता था, तब मेरा आंसुओं से परिचय नहीं हुआ था| मैं आनंद-महल में रहता था, जहाँ दुःख को प्रवेश करने की इजाजत नहीं थी| दिन में मैं अपने उद्यान में विलास करता था और रात को नृत्य में लगा रहता था| मेरे उद्यान के चारों ओर एक प्राचीर थी, किंतु मेरे चारों ओर इतना सौन्दर्य था कि मैंने कभी बाहर देखने का प्रयत्न नहीं किया| मैं जीता रहा और मर गया| आज जब मैं मर गया हूँ, तो उन्होंने मुझे इतने ऊँचे पर स्थापित कर दिया है कि मैं संसार की सारी कुरूपता और दुःख-दर्द देख सकता हूँ| मेरे ही नगर में इतना दुःख है कि यद्यपि मेरा ह्रदय जस्ते का है, मगर फिर भी फटा जा रहा है|"

दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:-

(क) उपर्युक्त गद्यांश किस पाठ से है? इसके लेखक का नाम लिखिए|

(ख) मूर्ति ने कहा कि मैंने कभी बाहर देखने का प्रयत्न नहीं किया| - अर्थ स्पष्ट करते हुए बताइए कि मूर्ति ने ऐसा क्यों कहा?

(ग) मूर्ति ने क्यों कहा कि मेरा ह्रदय फटा जा रहा है?

1. निम्नलिखित गद्यांश का सार लगभग **एक तिहाई** शब्दों में लिखिए|

   विगत एक-दो दशकों में युवावर्ग में अपव्यय की प्रवृति बढ़ रही है| भोगवाद की और युवक अधिक प्रवृत्त हो रहे हैं| वे सुख-सुविधा की प्रत्येक वस्तु पा लेना चाहते हैं और अपनी आय और व्यय में तालमेल बिठाने की उन्हें चिंता नहीं है| धन-संग्रह न सही, कठिन समय के लिए कुछ बचाकर रखना भी वे नहीं चाहते| उन्हें लुभावने विज्ञापनों के माध्यम से उत्पादक-व्यवसायी भरमाते हैं| परिणामस्वरूप आज का युवक मात्र उपभोक्ता बनकर रह गया है| अनेक कम्पनियाँ और क्रेडिट-कार्ड देकर उनकी खरीद शक्ति को बढ़ाने का दावा करते हैं और बाद में निर्ममता से वसूलते हैं| आज का युग भौतिक सुख भोगने के लिए अनेक प्रकार के प्रलोभन दे रहा है| युवा-वर्ग इनमें उलझता चला जा रहा है| आजकल मोबाइल फ़ोन का प्रयोग भी एक फ़ैशन बनता चला जा रहा है| इस सब वस्तुओं ने हमारे मन में अशांति के बीज बो दिए हैं|